P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-XI*July-2015

स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण में–आध्यात्मिकता और विज्ञान का समन्वय के शैक्षिक विचार

ओम प्रकाश
सहायक प्रध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टप्पल, अलीगढ़

सारांश

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा मनुष्य को उसके सच्चिदानन्द स्वरूप से परिचित कराती है। स्वामी जी ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो जीवन में परिचित कराती है। स्वामी जी ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो जीवन में धर्म की वास्तविक मर्यादा स्थापित करने वाली तथा सर्वांगीण विकसित चरित्र के नागरिक बनाने में समर्थ हों।

मुख्य शब्द : शक्तिशाली बनो, ठोस और कठिन प्रयास करो और अपनी दशा को स्वयं सुधारने का प्रयास करो।

प्रस्तावना

उन्नीसवो शताब्दी सम्पूर्ण विश्व में एक एसी शताब्दी के रूप में जानी जाती है जिसमें अनेक महान विचारको ने अपने चिन्तन के द्वारा एक नये समाज की रचना मे महान योगदान दिया। उनमें से अनेक विचारको ने मानवता के कल्याण तथा सामाजिक पुनर्निमाण के लिये जो प्रयत्न किये, उन्ही के प्रभाव से संसार के अनेक समाज आज नया रूप ग्रहण कर रहें हैं। जिनका प्रभाव भारतीय समाज पर चिरकाल तक बना रहेगा। उन्होंने भारत की प्राचीन धार्मिक मान्यताओं को न केवल एक नया अर्थ दिया बल्कि भारतीय संस्कृति की गिरती हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने और नयी पीढ़ी को सही दिशा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने अपने धार्मिक और सामाजिक चिन्तन से सम्पूर्ण विश्व में भारत की पतिष्ठा बढायी तथा स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता के समीप सिमूलिका नामक स्थान में हुआ। चार जुलाई 1902 को मृत्यु हो गयी। 39 वर्ष के अपने छोटे से जीवन में वह सब कुछ कर दिखाया जिससे शताब्दियों से सोया हुआ भारतीय समाज पुनजार्गरण की दिशा म आगे बढने लगा।

स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन उनके गुरू रामकृष्ण परमहंस के विचारों पर आश्रित है। रामकृष्ण परमहंस वेदान्त दर्शन के समर्थक एवं प्रचारक थे। जिसके कारण स्वामी विवेकानन्द भी वेदान्त दर्शन के समर्थक बने। उन्होने वेदान्त दर्शन के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया तथा उसके अनुरूप अपने आचरण को भी ढाला।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन के आधार वेदान्त दर्शन पर आधारित है। उनका लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से वेदान्त दर्शन के आचार विचार को प्रचारित करना था। अर्थात स्वामी जी ने वेदान्त पर आधारित धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को प्रसारित करने हेतु अपने शिक्षा दर्शन का प्रयास किया।

शिक्षा का अर्थ

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को उसके व्यापक अर्थ में ग्रहण किया कि शिक्षा ज्ञान का संग्रह नहीं बल्कि संतलित विकास हेतु ज्ञानार्जन है। स्वामी जी केवल पुस्तकीय ज्ञान को शिक्षा नहीं मानते। वे ज्ञान को शिक्षा का आधार मानते है जो मनुष्य को उसके आध्यात्मिक स्वरूप का दर्शन करा सके। स्वामी जी ने कहा है कि ''मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति पूर्ण रूपेण सचेत नहीं रहता। वह अपना आध्यात्मिक परिचय अपनी आत्मा जो सत् चित् आनन्द रूप है, से नहीं कर पाता।'' जबकि शिक्षा का वास्तविक अभिप्राय मनुष्य को उसके सच्चिदानन्द स्वरूप से परिचित कराना है।

स्वामी जी शिक्षा के इस आध्यात्मिक अभिप्राय के अतिरिक्त उसे भौतिक जगत की विभिन्न उपलब्धियों को दिलाने वाली भी मानते है। भौतिक उपलब्धियों के अन्तर्गत वे शिक्षा को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करने वाली शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास कर उसका चरित्र निर्माण करने वाली शैक्षिक

व्यवस्था स्वीकार करते हैं अर्थात स्वामी जी शिक्षा को आध्यात्मिक ज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का समन्वय करने वाले साधन के रूप में देखते हैं। अतः स्वामी जी ने स्वयं कहा है कि ''केवल पुस्तक तक कि शिक्षा से काम नहीं चलेगा, हमारा प्रयोजन उस शिक्षा से है जिसके द्वारा चरित्र गठन हो मन का बल बढ़े बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी हो सके।'' अर्थात हम कह सकते हैं कि स्वामी जी शिक्षा को ज्ञान का संग्रह नहीं मानते बल्कि उनके अनुसार शिक्षा वह ज्ञानार्जन है जो मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के साथ उसके भौतिक विकास सर्वागींण विकास का आधार बन सके।

स्वामी जी के अनुसार ''शिक्षा मनुष्य में पूर्व से ही स्थित पूर्णता अभिव्यक्ति है।''

इस प्रकार स्वामी जी ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जीवन में धर्म की वास्तविक मर्यादा स्थापित करने वाली तथा सर्वागींण विकसित चरित्र के नागरिक बनाने में समर्थ हो।

वेदों के अध्ययन तथा वेदान्त दर्शन के आधार पर विवेकानन्द इस आधार पर पहुँचे कि मानवतावाद तथा आध्यात्मवाद हिन्दू धर्म की मूल विशेषताएं है हिन्दू धर्म एक ऐसा सत्य है जिसमें न्याय नैतिकता और मानवता का समन्वय है। सच तो यह है कि संसार में हिन्दू धर्म के अतिरिक्त ऐसा कोई दूसरा धर्म नहीं है जो मानवता के गौरव को इतने उच्च रूप में स्वीकार करता है। विवेकानन्द ने उन पण्डितों और पुरोहितों की खुले आम आलोचना की जिन्होंने अपने स्वार्थों के कारण हिन्दू धर्म को कर्मकाण्डो और कुरीतियों का आवरण पहनाकर कलंकित कर रखा है।

धर्म के मानवतावादी पक्षों को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने व्यक्ति की आत्मा का परमात्मा का ही अंश मानते हुए सभी मानव प्राणियों के बीच समानता का उपदेश दियां वेदान्त धर्म के आधार पर उन्होंने बताया कि धर्म का मूल्य तत्व सेवा, त्याग और प्रेम है। इसप्रकार हम दुर्बल और असहाय व्यक्ति की जितनी अधिक सेवा करते हैं हम ईश्वर के उतने ही निकट आ जाते है। अपने इन्ही विचारों को मूर्त रूप देने के लिए विवेकाननद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका एक मात्र उद्देश्य मानव मात्र की सेवा करना है। स्वामी जी का कहना था कि वेदान्त के दर्शन के द्वारा भारत का कल्याण और उत्थान हो सकता हैं प्रत्येक आत्मा वास्तव में दैविक होती ह उन्होंने शिकामों में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन के अन्तिम सत्र में 27 सितम्बर 1893 को यह अमर संदेश मानवता को दिया था। ''सहायता करो, लड़ो नहीं। एकीकरण करो न कि विनाश, परस्पर सदभाव और शान्ति रखो, न कि आपसी मतभेद।

"Help and not fight, assimilation and not destruction, harmony and peace and not dissension."

वे एक बहुत गतिशील प्रकृति के दार्शनिक थे। उनका कहना था कि एक निर्धन को रोटी की अधिक आवश्यकता होती है। न कि आध्यात्मिकता की ओर भारतीय युवा लोगों को आध्यात्मिकता को अर्जित करने से पहले फुटबाल खेलकर अपना शारीरिक स्वास्थ्य बनाना चाहिए। वे वेदान्त के आध्यात्मिक ज्ञान प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पश्चिम के भौतिकवादी ज्ञान को मिश्रित करने और उनका समुचित उपयोग करने के प्रबल समर्थक थे।

वे सभी को यह उपदेश देते थे कि शक्तिशाली बनो, ठोस और कठिन प्रयास करो और जाग्रत हो तथा अपनी दशा को स्वयं सुधारने का प्रयास करो।

उनका कहना था कि ''जीव ही शिव है'' सन्यास कोई व्यवसाय नहीं है, उसका जन कल्याण में उपयोग होना चाहिये।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म शिक्षा का मेरुदण्ड है। अतः शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार होना चाहिए। लेकिन आत्मसाक्षात्कार मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर जाने मात्र से नहीं होता है। इसके लिए श्रद्धा, भक्ति, सतत् साधना, प्रेम और आस्था की आवश्यकता होती है। धर्म को स्वामी जी ह्रदय का दैवी प्रकाश मानते थे जो वर्तमान शिक्षा पद्धति से प्राप्त नहीं किया जा सकता। स्वामी जी धार्मिक शिक्षा के अन्दर चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों के विकास को प्राथमिकता देते है। धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत पूजा, अर्चना, कीर्तन, भजन, प्रार्थना, ध्यान को भी आवश्यकतानुसार स्थान दिया जाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा है कि धार्मिक शिक्षा पुस्तकों से नहीं बल्कि सदव्यवहार, सदाचरण एवं संस्कारों से प्राप्त होती है। स्वामी जी ने धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत शारीरिक विकास को भी स्थान दिया है उन्होने ने बताया कि सच्चे स्वर्ग की प्राप्ति गीता पढने की अपेक्षा फुटबाल खेलने से सरलता से हो सकती है। इतना ही नहीं उनके मत में असीम शक्ति का नाम धर्म है शक्ति में अच्छाई है निर्बलता पाप है।

स्वामी जी सभी धर्मों के प्रति आदरभाव रखते थे। क्योंकि उनका विचार था कि जिस प्रकार नदी का स्रोत या उदगम स्थान एक होता है परन्तु उसमें से हजारों धाराय फूटती है उसी प्रकार सभी धर्मों का स्रोत एक ही स्थान पर है। इसलिए स्वामी जी ने शिक्षण संस्थाओं में किसी धर्म विशेष की शिक्षा देना उचित नहीं माना। वे धार्मिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सभी धर्मों के श्रेष्ठ तत्वों का समावेश किये जाने के पक्षधर थे। अर्थात वे सर्वधर्म समभाव के समर्थक थे।

''नारायण (ईश्वर) तक पहुँचने का मार्ग दरिद्र नारायण से होकर गुजरता है'' अर्थात निर्धनों की सेवा करके ही ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है उन्होंने सामाजिक उत्थान पर बहुत बल दिया। उनका कहना था– ''मुझे 100 जोशीले युवा लोग दो, मै भारत को बदल दूंगा।''

"Give me 100 energetic young men and shall transform India."

उन्होंने भारतीय युवको से कहा ''तुम्हें मानवतावादी होना चाहिए। मानव को केवल मानव की आवश्यकता है और सब कुछ जायेगा लेकिन आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, पूर्ण प्रमाणिक (सही अर्थों में) नव युवका की। अपने पैरों पर स्वयं खड़े हो जाओ, देरी न करो, क्योंकि जीवन झणभंगुर है। वकील, बेरिस्टर बनने की अभिलाषा ही जीवन की सर्वोच्च अभिलाषा नहीं है। उससे उच्च अभिलाषा रखो और अपनी जाति, देश, राष्ट्र

और मानव कल्याण के लिए अपने जीवन का त्याग करना सीखो। जीवन कम समय का है परन्तु आत्मा अजर–अमर होती है और मृत्यु अनिवार्य है। इसलिए आओ अपने सामने एक महान आदर्श खड़ा करे और उसके लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करें।

स्वामी जी ने आधुनिक भारतीय परिस्थितियों का पूर्वाभाव पा लिया था और जो समन्वय कारी दृष्टिकोण उन्होंने प्रस्तुत किया, उसमें से बहुत कुछ आज की परिस्थिति में ग्रहणीय है सचमुच वेदान्त और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता इतनी कभी प्रबल नहीं हुई जितनी कि आज है स्वामी विवेकानन्द के विचार सार्वभौम महत्व के हैं उन्होंने कहा था कि हम मानव निर्माण का धर्म चाहते है। हम मनुष्य का निर्माण करने वाले सिद्धान्त चाहते है और हम मानव के सर्वागींण निर्माण की शिक्षा चाहते है।

निष्कर्ष

आज भारत में शिक्षा मर्यादाहीन, स्वार्थी, इन्द्रिय–लोलुपता प्रधान तथा धन को अत्यधिक महत्व देने वाली बन गयी है चरित्र, राष्ट्रभक्ति तथा आत्म विश्वास का गम्भीर अभाव है शिक्षक और नेता शिक्षा को परम पनीत समाजसेवी कार्य नहीं मानते है और उसे भी धन कमाने का व्यापार बना दिया गया है एकता और परस्पर सौहार्द सहानुभूति सेवाभाव लुप्त हो गये है। प्रत्येक व्यक्ति उर्ध्वगामी सामाजिक गत्यात्मकता (Vertical Social Mobility) के पीछे भाग रहा है दूसरों की भलाई की चिन्ता किसी को नहीं है भारतीय शिक्षा की आत्मा आज मर चुकी है।

ऐसे मर्यादाहीन समाज में स्वामी विवेकानन्द के विचारों का बहुत अधिक महत्व है उनको केवल दोहराने में ही लाभ नहीं होगा उन पर अमल करना होगा। हमारे शिक्षा मन्त्रियों, शिक्षा प्रशंसको और शिक्षकों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिये और ठोस जनहितकारी रचनात्मक कार्यक्रम शिक्षा जगत में चलाये जाने चाहिये।

संदर्भ

1. रोमा रोला, अनुवादक डात्र राधुराज गुप्त– विवेकानन्द की जीवनी, अद्वैव आश्रम (प्रकाशन विभाग) 5 डिही एण्टाली रोड–कोलकाता 700014।
2. डा. सावित्री माथुर–शिक्षा दर्शन, पृ.– 160 आस्था प्रकाशन, जयपुर।
3. डा. रामशुक्ल पाण्डेय, डा. बीना कपूर – शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ.–155, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
4. डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा– शिक्षा दर्शन, पृ.सं. 201, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली–110002।
5. श्याम सिंह– शिक्षा दर्शन, पृ. 180, ऑमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली– 110002।
6. डा. रामशुक्ल पाण्डेय – शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठ भूमि, पृष्ठ–220, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7।